Aa'la Hazrat Aur Amire Ahle Sunnat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 215
Weekly Booklet : 215

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ﷾ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

आ'ला हज़रत और अमीरे अहले सुन्नत

सफ़हात 21

आ'ला हज़रत की पहचान कैसे हुई ? 01
आ'ला हज़रत पर आंखें बन्द होने का मत़लब 06
सीरते आ'ला हज़रत पर कौन सी किताब पढ़ी जाए ? 11
उ़र्स मनाने का बेहतरीन त़रीक़ा 12

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत**
सिने तबाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1443** हि., सप्टेमबर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला (**आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत**) मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9898732611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत

दुआ़ए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला **''आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत''** पढ़ या सुन ले उसे अपने वलिय्ये कामिल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ता'लीमात पर अ़मल करते हुए फ़ैज़ाने रज़ा से मालामाल फ़रमा कर बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ''जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात 100 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** पाक उस की 100 ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और **अल्लाह** पाक एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है।''

(جمع الجوامع، 7/199، حدیث:22355)

आ'ला ह़ज़रत की पहचान कब और कैसे हुई ?

सुवाल (निगराने शूरा ने अमीरे अहले सुन्नत की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया :) जब मैं आप का मुरीद बना तो आप की ज़बान से पहली बार आ'ला

ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का नाम सुना, ऐसे लाखों इस्लामी भाई होंगे जिन्हों ने आप के बयानात के ज़रीए़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का नाम और तआ़रुफ़ सुना होगा। अगर कोई मुझ से सुवाल करे कि आ'ला ह़ज़रत का नाम कैसे सुना तो मैं जवाब दूंगा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़। अगर येही सुवाल कोई आप से करे तो आप क्या जवाब देंगे ?

जवाब मैं ने जब से होश संभाला तो मह़ल्ले की बादामी मस्जिद से दुरूदो सलाम और ना'तों की आवाज़ें सुनीं। चूंकि बच्चा सादा लौह़ (या'नी सादा तख़्ती की मानिन्द) होता है तख़्ती पर जो लिखा जाए वोह नक़्श हो जाता है तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! बचपन में ना'त व दुरूद वाला माह़ोल ऐसा ज़ेह्न में रचा बसा कि अब तक बाक़ी है। अगर मह़ल्ले की मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल की इन्तिज़ामिया हो या इमाम आ़शिक़े रसूल हो तो वोह इश्क़े रसूल के जाम भर भर कर तक़्सीम करेगा और अगर मुआ़मला इस के उलट हुवा तो अब असर भी उलटा पड़ेगा और अ़क़ाइद में ख़राबी हो सकती है। अ़क़ाइद में ख़राबी हो **अल्लाह** पाक इस से पहले ईमानो आ़फ़ियत के साथ मदीने में शहादत अ़ता फ़रमाए।

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّين صلى الله عليه واٰله وسلم (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 17)

आ'ला ह़ज़रत का पहला तआ़रुफ़

बादामी मस्जिद की इन्तिज़ामिया में ह़ाजी ज़करिय्या गोंडल के मेमन थे। गोंडल हिन्द गुजरात का एक शहर है जहां दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ मेरी ह़ाज़िरी हुई थी। वहां के इस्लामी भाइयों ने बताया था कि यहां एक भी बद मज़हब नहीं है जितने भी कलिमा गो हैं सब के सब आ़शिक़ाने रसूल हैं। एक बार मैं इसी बादामी मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर बैठा था कि ह़ाजी ज़करिय्या मर्ह़ूम ने दौराने गुफ़्तगू

आ'ला ह़ज़रत का नाम लिया और "मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ" कहा। उस वक़्त मेरी उ़म्र तक़रीबन 9 साल थी लेकिन इतनी समझ थी कि رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ किसी वली के नाम के साथ ही बोला जाता है क्यूं कि हम मेमनों के घरों में ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का ज़िक्र कसरत से होता है और इन की नियाज़ और इन के नाम के साथ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बोलने का इल्तिज़ाम किया जाता है लिहाज़ा ह़ाजी ज़करिय्या से आ'ला ह़ज़रत के नाम के साथ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ सुन कर मैं चौंका कि क्या येह भी कोई "वली" हैं जो इन के नाम के साथ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लगाया है ? इस पर ह़ाजी ज़करिय्या ने आ'ला ह़ज़रत का अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ तआ़रुफ़ करवाया कि येह बहुत नेक आदमी और बहुत बड़े वलिय्युल्लाह थे। यूं आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का पहली बार तआ़रुफ़ हुवा। इस से पहले अश्आ़र में "रज़ा रज़ा" सुनता था मगर कुछ समझ नहीं पड़ती थी कि येह रज़ा कौन हैं ? लेकिन फिर उस दिन पता चला कि येह रज़ा कोई आ़म शाइ़र नहीं बल्कि बहुत बड़ी शख़्सिय्यत के मालिक हैं। दिन गुज़रते गए और ह़ाजी ज़करिय्या ने रज़ा की ह़क़ीक़त और मा'रिफ़त का जो बीज बोया था वोह अन्दर जड़ पकड़ता गया और 60 साल के अ़र्से में बढ़ते बढ़ते आज اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! तनावर दरख़्त बन गया है। तह़दीसे ने'मत के लिये कह रहा हूं कि आज एक दुन्या है जो इस दरख़्त का फल खा रही है और रज़ा रज़ा पुकार रही है। बस येह **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस का करम है। **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ है कि जिस त़रह़ उस ने दुन्या में आ'ला ह़ज़रत के फ़ुयूज़ो बरकात से हमें मालामाल फ़रमाया आख़िरत में भी इन की बरकात से हमें मह़रूम न करे।

आ'ला ह़ज़रत से मुतअस्सिर रहने पर इस्तिक़ामत पाने का सबब

सुवाल (निगराने शूरा ने अ़र्ज़ किया :) इन्सान किसी से मुतअस्सिर हो जाता है लेकिन बा'ज़ अवक़ात मुस्तक़िल मुतअस्सिर रहता नहीं है। आप के आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ाते मुबारका से मुतअस्सिर होने और फिर इस पर इस्तिक़ामत पाने के क्या अस्बाब हैं ?

जवाब अस्ल में येह अपनी अपनी क़िस्मत की बात होती है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मेरी ख़ुश नसीबी है कि मैं आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मुतअस्सिर हो गया और फिर येह अ़क़ीदत दिन ब दिन बढ़ती चली गई। जब मैं ने जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखा तो किसी लायब्रेरी का मिम्बर बन गया। वहां से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़तावा के मज्मूए़ मसलन अह़कामे शरीअ़त, इ़रफ़ाने शरीअ़त और मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत वग़ैरा लेता और उन्हें थोड़ा थोड़ा कर के पढ़ता कि अगर येह ख़त्म हो गईं तो फिर क्या पढ़ूंगा ? येह मेरे जज़्बात थे, उन कुतुब में शर्ई़ मसाइल पढ़ कर मुझे इतना मज़ा आता कि मैं पढ़ता चला जाता। पतंग उड़ाना कैसा है ? झींगा खाना कैसा ? इस त़रह़ के दिलचस्प मसाइल जो उ़मूमन अ़वाम को मा'लूम नहीं होते उन्हें पढ़ कर लुत़्फ़ आता। फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ का तो शायद उस वक़्त नाम भी नहीं सुना था। बहर ह़ाल **अल्लाह** पाक ने बड़ा करम किया कि अपने वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल और अ़ज़ीम आ़लिमे दीन व मुफ़्तिये इस्लाम का दामन अ़त़ा फ़रमाया। आ़लिम और मुफ़्ती तो और भी बहुत हैं मगर अह़मद रज़ा जैसा कोई नहीं। अभी दो चार सदियों में आप जैसा कोई पैदा हुवा हो मेरी मा'लूमात में नहीं है। इस बात की गवाही हर वोह शख़्स देगा जो फ़तावा रज़विय्या का बग़ौर मुत़ालआ़ करे। कोई भी इ़ल्म

दोस्त शख़्स जिस की उर्दू अच्छी हो और कुछ न कुछ अ़रबी फ़ारसी भी समझ लेता हो जब वोह फ़तावा रज़विय्या पढ़ेगा तो मुतअस्सिर हुए बिग़ैर नहीं रह सकता, इस लिये कि वोह उस में इ़ल्मी तह़क़ीक़ की इतनी गहराई पाएगा कि जिस का तला नहीं मिलेगा। अगर कोई न्यूट्रल आदमी भी उर्दू फ़तावा का तक़ाबुल करे तो वोह फ़तावा रज़विय्या को ही हर लिह़ाज़ से फ़ाइक़ (बढ़ कर) पाएगा।

इन की सब ख़ूबियां वज़्नदार हैं

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ात ख़ूबियों का मज्मूआ़ है, क्या आप को इन ख़ूबियों में से बा'ज़ ज़ियादा पुर कशिश लगती हैं ?

जवाब मैं आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़ूबियों को बाहम तरजीह़ देने में फ़ैसला नहीं कर पा रहा क्यूं कि मुझे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की किसी ख़ूबी में कोई कमज़ोरी नज़र नहीं आ रही कि जिसे देख कर मैं दूसरी ख़ूबी को उस पर तरजीह़ दे सकूं। सारी ही ख़ूबियां वज़्नदार हैं। **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत में इन का कोई जवाब नहीं है। इ़श्क़े रसूल का वस्फ़ देखो तो मे'राज की बुलन्दियों पर है। क़ुरआने करीम के फ़ह्म में इन का कोई मिस्ल नहीं, इन के जैसा कोई मुफ़स्सिर नहीं, इन जैसा कोई मुह़द्दिस नहीं, इन जैसा कोई मुफ़्ती नहीं, इन जैसा कोई अ़ल्लामा नहीं, बस हर त़रफ़ रज़ा के जल्वे ही नज़र आ रहे हैं। हम कह सकते हैं कि "जिस सम्त आ गए हैं सिक्के बिठा दिये हैं।"

आ'ला ह़ज़रत पर अपनी आंखें बन्द हैं

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हम ने आ'ला ह़ज़रत का दामन पकड़ कर वल्लाह, बिल्लाह, तल्लाह ठोकर नहीं खाई बल्कि हम ने इस दर के लिये दुन्या ठुकराई है। **अल्लाह** करे कि आ'ला ह़ज़रत का दामन हमारे हाथों से न

छूटे, इन का दरवाज़ा मज़बूती से पकड़ना है कि "यक दर गीर मोहकम गीर या'नी एक ही दरवाज़ा पकड़ो मगर मज़बूती से पकड़ो" की ता'लीम भी आ'ला ह़ज़रत ही ने दी है। येह भी ठीक तो वोह भी ठीक नहीं बल्कि जो रज़ा कहें वोही ठीक है क्यूं कि रज़ा कोई भी बात क़ुरआनो ह़दीस से हट कर नहीं करते। जब हम ने इन के फ़तावा, इन की कुतुब और इन की सीरत का मुत़ालआ़ किया तो हमारी समझ में येह बात आ गई कि रज़ा की ज़बान से वोही निकलता है जिस की ताईद व तस्दीक़ क़ुरआनो ह़दीस से होती है। इस लिये रज़ा पर अपनी आंखें बन्द कर दें, अगर आंखें खोलीं तो कहीं ऐसा न हो कि मुश्किल खड़ी हो जाए और दिल की आंखें बन्द हो जाएं लिहाज़ा आंखें बन्द कर के रज़ा के पीछे पीछे चलते जाइये اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم गौ़से पाक के दामन तक पहुंच जाएंगे और ग़ौसे पाक अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों तक ले जाएंगे।

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

आ'ला ह़ज़रत पर आंखें बन्द होने का मत़लब

सुवाल "आ'ला ह़ज़रत पर हमारी आंखें बन्द हैं" इस बात की मज़ीद वज़ाह़त फ़रमा दीजिये।

जवाब इस का मत़लब येह है कि हम आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पर किसी भी क़िस्म की तन्क़ीद नहीं करते और न ही हमें इन की बयान कर्दा किसी बात के बारे में कोई शुबा होता है आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के मुआ़मले में आंखें बन्द करने में ही आ़फ़ियत है, इस बारगाह में आंखें खोलेंगे तो ठोकर लगने का ख़दशा है। याद रखिये! हम आ'ला ह़ज़रत को **अल्लाह** पाक का वली मानते हैं, नबी नहीं मानते, **अल्लाह** पाक

के बे शुमार औलियाए किराम رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم हैं, उन्ही में से एक आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ भी हैं।

आ'ला ह़ज़रत की मह़ब्बत दिल में कैसे पैदा की जाए ?

जो चाहता है कि आ'ला ह़ज़रत की मह़ब्बत उस के दिल में उतर जाए तो उसे चाहिये कि ऐसे लोगों की सोह़बत में बैठे जो रज़ा रज़ा करते हों और इस के इ़लावा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की कुतुब और आप की सीरत का मुत़ालआ़ भी करता रहे, اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ الۡکَرِیۡم नस नस में आ'ला ह़ज़रत की मह़ब्बत रच बस जाएगी।

याद रहे कि आ'ला ह़ज़रत की मह़ब्बत दिल में रचने बसने से येह मुराद नहीं कि مَعَاذَاللّٰہ अब किसी और बुज़ुर्ग से मह़ब्बत नहीं करनी। हम तो फ़ैज़ाने अम्बिया व औलिया के क़ाइल हैं। तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام, तमाम सह़ाबए किराम और अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم को भी मानते हैं और तमाम औलियाए किराम رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم को भी मानते हैं।

आ'ला ह़ज़रत का इतना नाम क्यूं ?

सुवाल सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان, हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ और दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने भी तो दीन का काम किया है लेकिन आप आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ का ही इतना नाम क्यूं लेते हैं ?

(सोशल मीडिया का सुवाल)

जवाब बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم का तज़्किरा उ़मूमन मौक़अ़ मह़ल के ए'तिबार से किया जाता है अभी चूंकि आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के उ़र्स के अय्याम हैं तो हम आप का तज़्किरा कर रहे हैं। जब ग्यारहवीं शरीफ़ का महीना शुरूअ़ होगा तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ الۡکَرِیۡم ग्यारह रातें मदनी मुज़ाकरा

होगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारा तो बरसों से येह सिल्सिला चला आ रहा है कि ग्यारहवीं शरीफ़ का महीना शुरूअ़ होते ही ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर करना शुरूअ़ कर देते हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तज़्किरे में हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शान भी ज़ाहिर होती है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को जो अ़ज़ीमुश्शान मर्तबा ह़ासिल हुवा है वोह ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ग़ुलामी ही की वज्ह से ह़ासिल हुवा है।

मज़रए चिश्तो बुख़ारा व इराक़ो अजमेर कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 26)

या'नी ऐ ग़ौसे आ'ज़म ! वोह कौन सा खेत है जिस पर आप के करम का बादल नहीं बरसा, चाहे वोह अजमेर हो या इ़राक़, हर खेत पर आप के करम की बरसात हुई है। यक़ीनन आ'ला ह़ज़रत भी इस दरबारे गौहर बार के ग़ुलाम और फ़ैज़ याफ़्ता हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम लोग बारहा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का भी तज़्किरा करते हैं बल्कि येह ना'रा कि **"हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती"** भी हम ने ही लगाया है। नीज़ जब बारहवीं शरीफ़ का महीना तशरीफ़ लाएगा तो हम अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो यक़ीनन **अल्लाह** पाक की मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल हस्ती हैं उन का तज़्किरा करेंगे, اِنْ شَآءَ الله मरह़बा की धूमें मचाएंगे। (इस मौक़अ़ पर निगराने शूरा ने अ़र्ज़ किया :) اِنْ شَآءَ الله आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस शे'र को अपने लिये मश्अ़ले राह बनाएंगे :

ख़ाक हो जाएं अ़दू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का सुनाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 157)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 17)

यौमे आ'ला ह़ज़रत क्यूं मनाते हैं ?

सुवाल आप आ'ला ह़ज़रत का यौमे विलादत क्यूं मनाते हैं ?

जवाब हम आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का यौमे विलादत उन की नेकनामी ही की वज्ह से मनाते हैं वरना वोह न हमारे दादाजान हैं और न ताया बल्कि उन की तो ज़बान भी हमारी नहीं और न उन के साथ हमारा कोई ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है लेकिन हम ख़ानदानी रिश्तों को उन के तअ़ल्लुक़ पर क़ुरबान करते हैं इसी वज्ह से उन का यौमे विलादत मनाते हैं। वरना आज तो कोई अपने दादा या परदादा का भी यौमे विलादत नहीं मनाता बल्कि मा'लूम ही नहीं होता कि दादा की तारीख़े विलादत क्या थी। मुझे भी अपने दादाजान की तारीख़े पैदाइश या तारीख़े वफ़ात का इ़ल्म नहीं है मैं ने तो अपने दादा को देखा भी नहीं है, फिर येह तो दादा की बात है मुझे तो अपने वालिद साहि़ब की भी तारीख़े विलादत नहीं मा'लूम क्यूं कि मेरे बचपन में ही वालिद साहि़ब का विसाल हो गया था तो हम अपने शैख़ या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का यौमे विलादत मनाते हैं क्यूं कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने लिखा है : वालिद पिदरे गिल है और शैख़ पिदरे दिल या'नी बाप मिट्टी के वुजूद का बाप है और शैख़ या'नी पीर या दीनी उस्ताज़ दिल का बाप होता है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/476) इन दोनों का एह़तिराम अपनी अपनी जगह ज़रूरी है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 49)

पढ़ने के लिये किन कुतुब का इन्तिख़ाब करें ?

सुवाल किस त़रह़ की दीनी किताबें पढ़नी चाहिएं ?

जवाब कोई भी किताब पढ़ने के लिये किसी अच्छे आ़लिमे दीन से मश्वरा कर लिया जाए कि मैं कौन सी किताब पढ़ूं। मक्तबतुल मदीना

से प्रिन्ट होने वाली कुतुब क़दीम उ़लमाए किराम की लिखी हुई होती हैं या फिर दा'वते इस्लामी के इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताबें होती हैं उन का मुत़ालआ़ किया जाए, बहारे शरीअ़त पढ़िये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मक्तबतुल मदीना ने बहारे शरीअ़त तख़्रीज के साथ शाएअ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है, फ़तावा रज़विय्या और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दीगर कुतुब का भी मुत़ालआ़ किया जाए।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 50)

आ'ला ह़ज़रत कहने की वज्ह

सुवाल इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को "आ'ला ह़ज़रत" क्यूं कहा जाता है ?

जवाब आ'ला के मा'ना उ़म्दा और बेहतरीन के हैं चूंकि हमारे इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बेहतरीन और उ़म्दा थे इसी लिये वोह "आ'ला ह़ज़रत" थे। हमारे उ़लमाए किराम आप को "आ'ला ह़ज़रत" कहते हैं तो हम भी आप को आ'ला ह़ज़रत कहते हैं। नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बर दस्त इ़ल्म वाले हैं इस लिये "आ'ला ह़ज़रत" हैं।[1]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 71)

1... इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़ानदान के लोग इम्तियाज़ व तआ़रुफ़ के तौ़र पर अपनी बोलचाल में "आ'ला ह़ज़रत" कहते थे। आज सिर्फ़ पाको हिन्द के अ़वामो ख़वास ही नहीं बल्कि सारी दुन्या के आ़शिक़ाने रसूल की ज़बानों पर येह लफ़्ज़ चढ़ गया और अब क़बूले आ़म की नौबत यहां तक पहुंच गई कि क्या मुवाफ़िक़ क्या मुख़ालिफ़ ! किसी ह़ल्क़े में भी "आ'ला ह़ज़रत" कहे बिग़ैर इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शख़्सिय्यत की ता'बीर (Introduction) ही मुकम्मल नहीं होती।

(सवानेह़े इमाम अह़मद रज़ा, स. 8 ब तग़य्युरे क़लील)

सीरते आ'ला ह़ज़रत की माख़ज़ किताब

सुवाल सीरते आ'ला ह़ज़रत पर कौन सी किताब पढ़ी जाए ?

(रुक्ने शूरा का सुवाल)

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर बहुत सी किताबें हैं, लेकिन उन सब का माख़ज़ ''ह़याते आ'ला ह़ज़रत'' है जो ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की तस्नीफ़ है। आप ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बहुत सोह़बत पाई और तीन जिल्दों में येह किताब लिखी। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर जो किताबें लिखी जाती हैं उन का मवाद उ़मूमन ''ह़याते आ'ला ह़ज़रत'' से ही लिया जाता है। जैसे सरकारे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर लिखी जाने वाली किताबें उ़मूमन ''बह्जतुल असरार'' से लिखी जाती हैं जो बहुत बड़े बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली बिन यूसुफ़ शत्तनौफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर अ़रबी ज़बान में लिखी हुई बहुत पुरानी किताब है। सीरत निगार को हर बात पहुंच जाए येह ज़रूरी नहीं होता, बा'ज़ बातें अपने त़ौर पर भी मा'लूम होती हैं। जैसे मक्तबतुल मदीना का रिसाला ''बरेली से मदीना'' है, इस रिसाले के अन्दर मैं ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत की ऐसी बातें भी लिखी हैं जो मुझे अपने तजरिबात और बुज़ुर्गों की मुलाक़ात से Direct (बिला वासित़ा) मा'लूम हुई हैं और वोह बातें ''ह़याते आ'ला ह़ज़रत'' में मौजूद नहीं हैं। इसी त़रह़ और भी कई किताबें हो सकती हैं जिन में लिखने वालों को Direct मा'लूमात ह़ासिल हुई हों और उन्हों ने किताब में शामिल कर दी हों। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 72)

"माहिये बिद्अ़त" का मत़लब

सुवाल आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "माहिये बिद्अ़त" थे, इस का क्या मत़लब है ?

जवाब "माहिये बिद्अ़त" आप का लक़ब है, इस का मत़लब है : बिद्अ़त को मिटाने और सुन्नतों को ज़िन्दा करने वाले । सुन्नतों की जगह जो बिद्अ़तें और गुमराहियां राइज हो गई थीं आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उन को मिटाया है इसी लिये आप को माहिये बिद्अ़त कहा जाता है । (क़िस्त़ : 73)

सुवाल क्या आप का आ'ला ह़ज़रत के मज़ार शरीफ़ पर जाना हुवा है ?

जवाब اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दो बार बरेली शरीफ़ ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई है । (क़िस्त़ : 17)

उ़र्स मनाने का बेहतरीन त़रीक़ा

सुवाल उ़र्से आ'ला ह़ज़रत किस त़रह़ मनाया जाए ?

जवाब उ़र्से आ'ला ह़ज़रत मनाने का अन्दाज़ इस त़रह़ हो कि उस में क़ुरआन ख़्वानी, ना'त ख़्वानी की जाए, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलू उजागर किये जाएं, उन का तक़्वा व परहेज़ गारी, उन का इ़ल्म, उन की दीनी ख़िदमात और उन की करामात का तज़्किरा किया जाए । इस त़रह़ लोगों के दिलों में औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم की मह़ब्बत बढ़ेगी । आ़म त़ौर पर आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन में उ़लमाए किराम बयान फ़रमाते हैं और येह होने भी चाहिएं, इस के बा'द जो नेकियां होती हैं उन का ईसाले सवाब होता है, फिर खाना भी खिलाया जाता है । खाना खिलाना बड़े सवाब बल्कि

मग़्फ़िरत वाजिब कराने वाले कामों में से एक है । (مکارم الاخلاق للطبرانی، ص370، حدیث: 158) (नीज़) उ़र्स मनाने का एक त़रीक़ा येह भी है कि ईसाले सवाब के लिये इ़ल्मे दीन की इशाअ़त में ह़िस्सा लिया जाए। आ'ला ह़ज़रत ने ज़िन्दगी भर इ़ल्मे दीन की ख़िदमत की है, हम ने आ'ला ह़ज़रत का दामन यूं ही नहीं पकड़ा बल्कि आप की शख़्सिय्यत ही ऐसी है जिस का दामन पकड़ कर गौहरे मुराद ह़ासिल किया जा सकता है। मेरे आ'ला ह़ज़रत, आ'ला ह़ज़रत थे जिन का एक सेकन्ड भी ज़ाएअ़ नहीं होता था। आप को इ़ल्मे दीन से प्यार था, आप ने इस की इशाअ़त में अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ की हुई थी लिहाज़ा आप के ईसाले सवाब के लिये अगर हम इ़ल्मे दीन की किताबें तक़्सीम करेंगे तो येह ईसाले सवाब का बेहतरीन त़रीक़ा होगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 73)

आ'ला ह़ज़रत की मसरूफ़िय्यात का आ़लम

सुवाल आ'ला ह़ज़रत की मसरूफ़िय्यात का आ़लम क्या था ?

जवाब आप दीन की ख़िदमत में इस क़दर मसरूफ़ थे कि एक बार किसी ने अपनी अन्जुमन की सर परस्ती करने का अ़र्ज़ किया कि आप हमारे लिये काम करें। इर्शाद फ़रमाया : आप मेरे पास तशरीफ़ ले आएं और मेरे शबो रोज़ का मुआ़यना करें कि मैं क्या क्या काम करता हूं, अगर कोई मिनट आप को फ़ारिग़ मिल जाए तो मैं वोह मिनट आप को दे दूंगा। (फ़तावा रज़विय्या, 29/110, 111 मुलख़्ख़सन) या'नी आप के पास एक मिनट भी फ़ारिग़ नहीं होता था। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 73)

सुवाल क्या आ'ला ह़ज़रत की सब किताबें छप गई हैं ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सिर्फ़ फ़तावा का मज्मूआ़ 30

जिल्दों में शाएअ़ हुवा है ह़ालां कि शुरूअ़ के 10 साल के फ़तावा तो जम्अ़ ही नहीं हुए । ख़ुदा बेहतर जानता है कि आप की कितनी तस्नीफ़ात अभी तक छपी भी नहीं हैं, ग़ैर मत़्बूआ़ ही रह गई हैं । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखने में काम्याब हो गए मगर हम छापने में काम्याब नहीं हुए, ह़ालां कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अकेले लिखने वाले थे और हम लाखों छापने वाले हैं, इस के बा वुजूद हम उन से पीछे रह गए । (क़िस्त़ : 73)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत के शागिर्दों की कितनी ता'दाद है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बड़े बड़े उ़लमा तय्यार फ़रमाए हैं, आज तक उन के शागिर्दों के शागिर्दों के शागिर्द ही चले आ रहे हैं, या'नी यूं कह सकते हैं कि हज़ारों उ़लमाए किराम आप के शागिर्द हैं और इस वक़्त दुन्या भर में फैले हुए हैं । (क़िस्त़ : 73)

इ़श्क़े रसूल बढ़ाने का वज़ीफ़ा

सुवाल इ़श्क़े रसूल में इज़ाफ़ा कैसे हो ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इ़श्क़े रसूल में इज़ाफ़े का एक नुस्ख़ा येह भी बयान फ़रमाया है कि "ख़ुश इल्ह़ान क़ारी से क़ुरआने करीम की तिलावत सुनने से **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत बढ़ती है और ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वां से ना'त शरीफ़ सुनने से इ़श्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होता है ।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 173) ना'तें भी वोह सुनें जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हों, जैसे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ऐसे आ़शिक़े रसूल हैं कि आप के क़लम से निकला हुवा हर मिस्रअ़, बल्कि हर लफ़्ज़ इ़श्क़े रसूल में डूबा हुवा होता है, ऐसों का कलाम सुनने से दिल में इ़श्क़ बढ़ेगा, यहां तक कि समझ में नहीं भी आएगा तब भी दिल मुत़्मइन रहेगा कि इन का कलाम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ है, पल्ले पड़े या न पड़े, झूमे जाएं । बरादरे आ'ला ह़ज़रत, शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन

रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत के लिखे हुए कलाम पढ़ने सुनने से भी اِنْ شَآءَالله इ़श्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होगा । (एक मदनी मुज़ाकरे में फ़रमाया :) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के क़दमों से लिपटे रहें اِنْ شَآءَالله इ़श्क़ की सारी मन्ज़िलें ब आसानी त़ै हो जाएंगी । (क़िस्त़ : 128)

सुवाल ह़दाइक़े बख़्शिश के बारे में भी कुछ बताइये ।

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ना'तिया दीवान ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' पढ़ा जाए । अच्छी उर्दू जानने वाला अगर ह़दाइक़े बख़्शिश को समझ कर रटता रहे तो वोह बहुत बड़ा आ़शिक़े रसूल बन जाएगा । सच्ची बात येह है कि इ़श्क़े रसूल के ह़ुसूल में माह़ोल और सोह़बत ज़ियादा कारगर है । सोह़बत के ज़रीए़ जज़्बा बढ़ता है । अब जैसा कि कोई ह़ज या मदीनए पाक की ह़ाज़िरी के लिये गया और उस सफ़र में किसी आ़शिक़े मदीना की सोह़बत न मिली तो उसे ज़ौक़ नसीब नहीं होगा लिहाज़ा ह़रमैने त़य्यिबैन का सफ़र अहले ज़ौक़ और अहले इ़ल्म के साथ करना चाहिये । नीज़ अपने मुल्क में भी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त गुज़ारना चाहिये । اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और मदनी मुज़ाकरात में शिर्कत से मदीने शरीफ़ की मह़ब्बत की चाश्नी मिलती है । (क़िस्त़ : 128)

दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है

सुवाल आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस मक़्त़अ़ की वज़ाह़त फ़रमा दें :

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वागाहे ह़बीब तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 147)

जवाब इक़्बाल कहता है :

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है

हो सकता है डॉक्टर इक़्बाल ने आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस मक़्तअ़ को आसान किया हो कि तारीख़ में मौजूद है डॉक्टर इक़्बाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मुतअस्सिर थे। बहर हाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस शे'र में फ़रमा रहे हैं : "ऐ रज़ा ! तुम चाहते हो कि तुम्हारे दिल में प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे समा जाएं तो अपने आप को समझाओ और अपने आप को कुछ समझने वाली सोच से रहीदा या'नी आज़ाद हो जाओ।" या'नी आ़जिज़ी व इन्किसारी करोगे तो तुम्हारे दिल में **अल्लाह** पाक के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे उतर आएंगे और अगर अपने आप को कुछ समझोगे और "मैं मैं" करोगे तो कुछ नहीं होगा। येह आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आ़जिज़ी है आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आ़जिज़ी के पैकर थे। अगर हम भी आ़जिज़ी करें तो वाक़ेई वोह जल्वा कहां नहीं ! लेकिन दर ह़क़ीक़त हमारे अन्दर आ़जिज़ी ही नहीं। (क़िस्त : 136)

एक पसन्दीदा किताब का इन्तिख़ाब

सुवाल अगर आप को किसी जंगल या सह़रा वग़ैरा में मह़सूर कर दिया जाए और अपने साथ क़ुरआनो ह़दीस के इ़लावा सिर्फ़ एक किताब रखने की इजाज़त दी जाए तो आप किस किताब का इन्तिख़ाब फ़रमाएंगे ?

जवाब वोह मह़सूर करने वाला अगर फ़तावा रज़विय्या की 30 जिल्दों को एक किताब तस्लीम कर ले तो मैं अपने साथ आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ ले जाने की

दरख़्वास्त करूंगा क्यूं कि इस में बहुत कुछ है, इ़बादात और ए'तिक़ादात के बारे में बहुत सारी रहनुमाई मौजूद है नीज़ इस में तसव्वुफ़ भी है।

(अमीरे अहले सुन्नत की कहानी इन्ही की ज़बानी, क़िस्त : 6)

किताबों में तरजमए कन्ज़ुल ईमान के एहतिमाम की वज्ह

सुवाल हुज़ूर ! आप अपने बयानात और तसानीफ़ वग़ैरा में आयाते मुबारका के तरजमे में "तरजमए कन्ज़ुल ईमान" का ही एहतिमाम फ़रमाते हैं इस की क्या वज्ह है ?

जवाब जिस त़रह़ आ'ला ह़ज़रत की हर बात क़ुरआनो ह़दीस के ऐ़न मुत़ाबिक़ है ऐसे ही आप का शोह्रए आफ़ाक़ तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान भी क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ और इ़श्क़ो मह़ब्बत में डूबा हुवा है। इस तरजमे में जो ख़ूबियां हैं वोह किसी और तरजमे में नहीं पाई जातीं, इस लिये मैं तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान का ही एहतिमाम करता हूं।

क़ुरआने करीम **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन का कलाम है इस का तरजमा करना कोई आसान काम नहीं। जिन लोगों ने आसान समझ कर इस का तरजमा करने की कोशिशें की हैं तो उन्हों ने ठोकरें भी बहुत खाई हैं। उन मुतर्जिमीन (या'नी तरजमा करने वालों) की नज़र अल्फ़ाज़े क़ुरआनी की रूह़ तक न पहुंच सकी, लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ तरजमा करने के सबब येह लोग मक़ामे उलूहिय्यत (या'नी **अल्लाह** पाक के मक़ामो मर्तबे) और शाने रिसालत (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान) का पास न रख सके और ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जो मक़ामे उलूहिय्यत और शाने रिसालत के क़त़्अ़न मुनाफ़ी हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तरजमे का त़रीक़ा येह था कि आप ज़बानी

आयाते करीमा का तरजमा बोलते जाते और सदरुश्शरीअ़ह (मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) उस को लिखते जाते। फिर जब सदरुश्शरीअ़ह और दीगर उ़लमाए ह़ाज़िरीन आ'ला ह़ज़रत के तरजमे का कुतुबे तफ़ासीर से तक़ाबुल करते तो येह देख कर ह़ैरान रह जाते कि आ'ला ह़ज़रत का येह बरजस्ता फ़िल बदीह (या'नी फ़िलफ़ौर बोला हुवा) तरजमा तफ़ासीरे मो'तबरा (या'नी मो'तबर तफ़्सीरों) के बिल्कुल मुत़ाबिक़ होता।

(अन्वारे कन्ज़ुल ईमान, स. 932 मुलख़्ख़सन) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 36)

आ'ला ह़ज़रत की अपने पीरो मुर्शिद से महब्बत

सुवाल आ'ला ह़ज़रत को अपने पीरो मुर्शिद से कैसी महब्बत थी ?

जवाब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत को अपने बुज़ुर्गों से कैसी अ़क़ीदतो महब्बत थी बा वुजूद वलिय्ये कामिल होने के बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में अ़र्ज़ करते हैं :

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा तेरी रह़मत अगर शामिल है या ग़ौस

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 263)

अपने दादापीर ह़ज़रत सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां मारहरवी क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बारे में फ़रमाते हैं :

नामे से रज़ा के अब मिट जाओ बुरे कामो देखो मेरे पल्ले पर वोह अच्छे मियां आया
ख़ुशकार रज़ा ख़ुश हो सब काम भले होंगे वोह अच्छे मियां प्यारा अच्छों का मियां आया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 49)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने इस कलाम के मक़्त़अ़ के पहले मिस्रए़ में आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाते हुए ख़ुद को "बदकार" फ़रमाया है, मैं ने उस की जगह "ख़ुशकार" कर दिया है और "बद काम" को "सब काम" से बदल दिया है। अब इसी मक़्त़अ़ को मैं अपने लिये अ़र्ज़ करता हूं :

बदकार गदा ख़ुश हो बद काम भले होंगे देखो मेरे पल्ले पर वोह अह़मद रज़ा ख़ां आया

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 27)

आईडियल किसे बनाया जाए

सुवाल हमें अपना आईडियल किसे बनाना चाहिये ?

जवाब फ़ी ज़माना सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक ऐसी शख़्सिय्यत हैं कि जिन्हें मे'यार (Ideal) बना कर हम दोनों जहान की काम्याबी ह़ासिल कर सकते हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का हर क़ौल व फ़े'ल क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ रहा है इस लिये इन्ही को आईडियल बना कर इन के दामन को मज़बूत़ी से थाम कर "यक दर गीर मोह्कम गीर या'नी एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूत़ी के साथ पकड़" का मिस्दाक़ बन जाइये। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुक़ाबले में किसी शख़्सिय्यत से मुतअस्सिर हो कर अपनी अ़क़ीदत को मजरूह़ होने से बचाइये।

(फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त : 28)

ख़ाइफ़े किब्रिया..... हैं रज़ा हैं रज़ा
आ़शिक़े मुस्त़फ़ा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
सुन्नियों के पेश्वा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
रहबरो रहनुमा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
सूफ़िये बा सफ़ा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
साह़िबे इत्तिक़ा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
ख़ूबरू ख़ुश अदा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
दिलबरो दिलरुबा..... हैं रज़ा हैं रज़ा
आ़शिक़े औलिया..... हैं रज़ा हैं रज़ा
ज़ीनते अत्क़िया..... हैं रज़ा हैं रज़ा
आ़लिमे बा अ़मल..... हैं रज़ा हैं रज़ा
मुफ़्तिये बे बदल..... हैं रज़ा हैं रज़ा

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

دامت برکاتہم العالیہ

इस दौर में मेरे पास सुन्नियत का मे'यार "आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ" हैं, जो येह फ़रमाएं उस पर आंखें बन्द हैं।

(4 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1441 हि., 25 जुलाई 2020)

978-969-722-124-0

01082224

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی

UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278

www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net

feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net